

मीराबाई

सदृश गोपिन प्रेम प्रकट कलियुग ही दिखायो।
निर-अंकुश अति निडर रसिक-यश रसना गायो॥
दुष्टन दोष विचारि मृत्युको उद्यम कीयो।
बार न बाँको भयो गरल अमृत ज्यों पीयो॥
भक्ति निसान बजाइकै, काहू ते नाहीं लजी।
लोक-लाज-कुल-शृंखला-तजि मीरा गिरधर भजी॥

(नाभाजी)

मीराबाईका नाम कौन नहीं जानता? जिस भक्तशिरोमणि राजपूतरमणीकी गुण-गाथाको गा-गाकर आज लाखों जन भगवत्प्रेमको प्राप्त होते हैं, जिसके प्रेमपूरित पुनीत पदोंका गानकर अगनित नर-नारी भक्तिरसके पावन प्रवाहमें बह जाते हैं, जिस प्रातःस्मरणीया देवीके अनुपम चरित्रका अनुसरण कर प्रेमी भक्त अपने प्रियतम श्यामसुन्दरके नव-नील-नीरद मुख-कमलका दर्शन कर कृतार्थ होते हैं, उस भगवत्प्रेमकी जीती-जागती मूर्तिका किंचित् यशोगान कर आज यह अधम लेखक भी कृतार्थ होना चाहता है; क्योंकि भगवान् भक्त-यश-वर्णन और कीर्तनसे जितने प्रसन्न होते हैं उतने अपने गुणोंके कीर्तनसे नहीं होते।

भारतकी नारीजातिको धन्य करनेवाली भक्तिपरायणा मीराबाईका जन्म मारवाड़के कुड़की नामक ग्राममें संवत् १५५८के लगभग हुआ था। इनके पिताका नाम राठौर श्रीरतनसिंहजी था। मीरा अपने पिता-माताकी एकलौती लड़की थी। बड़े लाड़-

चावसे पाली गयी थी। मीराके चित्तकी वृत्तियाँ बचपनसे ही भगवान्की ओर झुकी हुई थीं। एक दिन उनके घरमें एक साधु आये, साधुके पास भगवान्की एक सुन्दर मूर्ति थी। मीराने साधुसे कहकर वह मूर्ति ले ली। साधुने मूर्ति देकर मीरासे कहा कि 'ये भगवान् हैं, इनका नाम श्रीगिरधरलालजी है। तू प्रतिदिन प्रेमके साथ इनकी पूजा किया कर।' सरलहृदया बालिका मीरा सच्चे मनसे भगवान्की सेवा करने लगी। मीरा इस समय दस वर्षकी थी, परंतु दिनभर उसी मूर्तिको नहलाने, चन्दन-पुष्प चढ़ाने, भोग लगाने और आरती उतारने आदिके काममें लगी रहती। सूरदासजीका एक पद उसने याद कर लिया और उसे भगवान्के सामने बारम्बार गाया करती।

जो विधना निज वश करि पाऊँ।

तो सब कहो होय सखि मेरो, अपनी साध पुराऊँ॥

लोचन रोम-रोम प्रति माँगों, पुनि पुनि त्रास दिखाऊँ।

इकटक रहै पलक नहिं लागे, पद्धति नई चलाऊँ॥

कहा करौं छवि-राशि श्यामघन, लोचन द्वै न अघाऊँ।

ये ते पर ये निमिष 'सूर' सुनु यह दुख काहि सुनाऊँ॥

मीरा यह पद गाते-गाते कई बार बेहोश हो जाती। शायद उसे 'छवि-राशि श्यामघन' के दर्शन होते होंगे!

इस समय मीरा स्वयं भी पद-रचना करने लगीं, जब वह स्वरचित सुन्दर पदोंको भगवान्के सामने मधुर स्वरोंमें गाती तो प्रेमका प्रवाह-सा बह जाता। सुननेवाले नर-नारियोंके हृदयमें प्रेम उमड़ने लगता। इस प्रकार भाव-तरङ्गोंमें पाँच साल बीत गये। संवत् १५७३ में मीराका विवाह चित्तौड़के सिसोदिया वंशमें

महाराणा सांगाजीके ज्येष्ठ कुमार भोजराजके साथ सम्पन्न हुआ। विवाहके समय एक अद्भुत घटना हुई। कृष्णप्रेमकी साक्षात् मूर्ति मीराने अपने श्यामगिरधरलालजीको पहलेसे ही मण्डपमें विराजित कर दिया और कुमार भोजराजके साथ फेरा लेते समय श्रीगिरधरगोपालजीके साथ भी फेरे ले लिये। मीराने समझा कि आज भगवान्के साथ मेरा विवाह भी हो गया।

मीराकी माताको इस घटनाका पता था, उसने मीरासे कहा कि 'पुत्री ! तैने यह क्या खेल किया ?' मीराने मुसकराते हुए कहा—

माई म्हाँने सुपनेमें बरी गोपाल।

राती पीती चुनड़ी ओढ़ी मेहँदी हाथ रसाल॥

काँई औरको बरूँ भाँवरी म्हाँके जगजंजाल।

मीराके प्रभु गिरधर नागर करो सगाई हाल॥

मीराके भगवत्प्रेमके इस अनोखे भावको देखकर माता बड़ी प्रसन्न हुई। जब सखियोंको इस बातका पता लगा तो उन्होंने दिल्लगी करते हुए मीरासे गिरधरलालजीके साथ फेरे लेनेका कारण पूछा। मीराने कहा—

ऐसे बरको के बरूँ जो जन्मैं और मर जाय।

बर बरिये गोपालजी म्हारौ चुड़लो अमर हो जाय॥

प्राणोंकी पुतली मीराको माता-पिताने दहेजमें बहुत-सा धन दिया; परंतु मीराका मन उदास ही देखा; तो माताने पूछा कि 'बेटी ! तू क्या चाहती है ? तुझे जो चाहिये सो ले लो।' मीराने मातासे कहा—

दे री माई अब म्हाँको गिरधरलाल।

प्यारे चरणकी आन करतिहौं, और न दे मणि लाल।

नातो सागो परिवारो सारो, मन लगे मानो काल।

मीराके प्रभु गिरधर नागर, छबि लखि भई निहाल॥

भक्तको अपने भगवान्‌के अतिरिक्त और क्या चाहिये ? माताने बड़े प्रेमसे गिरधरलालजीका सिंहासन मीराकी पालकीमें रखवा दिया। कुमार भोजराज नववधूको लेकर राजधानीमें आये। घर-घर मङ्गल बधाइयाँ बँटने लगीं। रूप-गुणवती बहूको देखकर सास प्रसन्न हो गयी। कुलाचारके अनुसार देवपूजाकी तैयारी हुई, परंतु मीराने कहा कि मैं तो एक गिरधरलालजीके सिवा और किसीको नहीं पूजूंगी। सास बड़ी नाराज हुई, मीराको दो-चार कड़ी-मीठी भी सुनायी, परंतु मीरा अपने प्रणपर अटल रही।

राजपूतानेमें प्रतिवर्ष गौरीपूजन हुआ करता है। छोटी-छोटी लड़कियाँ और सुहागिन स्त्रियाँ सुन्दर रूप-गुणसम्पन्न वर और अचल सुहागके लिये बड़े चावसे 'गौर-पूजा' करती हैं। मीरासे भी गौरी पूजनेको कहा गया, मीराने साफ जवाब दे दिया। सारा रनिवास मीरासे नाराज हो गया। सास और ननद ऊदाबाईने मीराको बहुत समझाया; परंतु वह नहीं मानी। उसने कहा—

ना म्हेँ पूजा गौरज्याजी ना पूजा अनदेव।

म्हेँ पूजा रणछोरजी सासु थे काँई जाणो भेव॥

सास बड़ी नाराज हुई। समवयस्क सहेलियोंने मीरासे कहा कि 'बहिन ! यह तो सुहागकी पूजा है, सभीको करनी चाहिये।' मीराने उत्तर दिया कि 'बहिनो ! मेरा सुहाग तो सदा ही अचल है, जिसको अपने सुहागमें संदेह हो, वह गिरधरलालजीको छोड़कर दूसरेको पूजे।' मीराके इन शब्दोंका मर्म जिसने समझी वह तो धन्य हो गयी; परंतु अधिकांश स्त्रियोंको यह बात बहुत बुरी लगी।

मीराकी इस भक्ति-भावनाको देखकर कुमार भोजराज पहले तो कुछ नाराज हुए; परंतु अन्तमें मीराके सरल हृदयकी शुद्ध भक्तिसे उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई। उन्होंने मीराके लिये अलग श्रीरणछोड़जीका मन्दिर बनवा दिया। कुमार भोजराज एक साहसी, वीर और साहित्यप्रेमी युवक थे। मीराकी पद-रचनासे उन्हें बड़ा हर्ष होता और इसमें वे अपना गौरव मानते। मीराका प्रेम-पुलकित मुखचन्द्र वे जब देखते तभी उनका मन मीराकी ओर खिंच जाता। जब मीरा नये-नये पद बनाकर पतिको गाकर सुनाती, तब कुमारका हृदय आनन्दसे भर जाता।

यद्यपि मीरा अपना सच्चा पति केवल श्रीगिरधरलालजीको ही मानती थी और प्रायः अपना सारा समय उन्हींकी सेवामें लगाती; परंतु उसने अपने लौकिक पति कुमार भोजराजको कभी नाराज नहीं होने दिया। अपने सुन्दर और सरल स्वभावसे तथा निःस्वार्थ सेवाभावसे उसे सदा प्रसन्न रखा। कहते हैं, कुछ समय बाद मीराकी अनुमति लेकर कुमारने दूसरा विवाह कर लिया था। मीराको इस विवाहसे बड़ी प्रसन्नता हुई। उसे इस बातका सदा संकोच रहता था कि मैं स्वामीकी मनोकामना पूरी नहीं कर सकती। अब दूसरी रानीसे पतिको परितृप्त देखकर और पतिके भी परम पति परमात्माकी सेवामें अपना पूरा समय लगानेकी सम्भावना समझकर मीराको बड़ा आह्लाद हुआ।

मीरा अपना सारा समय भजन-कीर्तन और साधु-सङ्गतमें लगाने लगी। वह कभी विरहसे व्याकुल होकर रोने लगती, कभी ध्यानमें साक्षात्कार कर हँसती, कभी प्रेमसे नाचती; भूख-प्यासका कोई पता नहीं। लगातार कई दिनोंतक बिना खाये-पीये प्रेम-

समाधिमें पड़ी रहती। कोई समझाने आता तो उससे भी केवल कृष्ण-प्रेमकी ही बातें करती। दूसरी बात उसे सुहाती ही नहीं। शरीर दुर्बल हो गया, घरवालोंने समझा बीमार है, वैद्य बुलाये गये, मारवाड़से पिता भी वैद्य लेकर आये। मीराने कहा—

हे री मैं तो राम दिवानी, मेरो दरद न जाणे कोय।

सूली ऊपर सेज हमारी, किस बिध सोणा होय॥

गगन मँडलपै सेज पियाकी, किस बिध मिलणा होय।

घायलकी गति घायल जाने, कि जिन लाई होय॥

जौहर की गति जौहरि जाने, कि जिन जौहर होय।

दरदकी मारी बन बन डोलूँ बैद मिल्या नहिं कोय॥

मीराकी प्रभु पीर मिटै जब बैद साँवलिया होय।

वैद्य देख गये। परंतु इन अलौकिक प्रेमके दीवानोंकी दवा बेचारे इन वैद्योंके पास कहाँसे आयी? विरहकातरा मीराने श्यामवियोगमें यह पद गाया—

नातो नावको जी म्हाँसू तनक न तोड्यो जाय। टेक।

पाना ज्यूँ पीली पड़ी रे, लोग कहें पिंडरोग।

छान लाँघण म्हेँ किया रे, राम मिलणके जोग॥

बाबल बैद बुलाइया रे, पकड़ दिखाई म्हारो बाँह।

मूरख बैद मरम नहिं जाणै, कसक कलेजे माँह॥

जाओ बैद घर आपणे रे, म्हारो नाव न लेय।

मैं तो दाझी बिरहकी रे, काहेकूँ औषध देय॥

माँस गलि गलि छीजिया रे, करक रह्या गल आय।

आँगलियाकी मूँदड़ी म्हारे, आवण लागी बाँह॥

रह-रह पापी पपीहड़ा रे, पियको नाव न लेय।

जो कोई बिरहण साम्हाले रे, पिव कारण जिव देय॥

छिन मन्दिर छिन आँगणे रे, छिन-छिन ठाढ़ी होय ।
 घायल ज्युँ घूमूँ खड़ी, म्हारी बिथा न बूझे कोय ॥
 काढ़ कलेजो मैं धरूँ रे, कागा तू लै जाय ।
 जिण देसाँ म्हारो हरि बसे रे, वाँ देखत तूँ खाय ॥
 म्हारो नातो नामको रे, और न नातो कोय ।
 मीरा ब्याकुल बिरहणी, हरि दर्शण दीज्यो मोय ॥

कैसी उत्कण्ठा है ! कैसा उन्माद है !! कितनी मनोहर लालसा है !!! भगवान् इसीसे वश होते हैं; इसीसे वे बिक जाते हैं। मीराने इसी मूल्यपर उनको खरीदा था। मीराने कहा है—

गोबिन्द लीन्यो मोल, माई मैं गोबिन्द लीन्यो मोल ।
 कोई कहै सस्तो कोई कहै महँगो लीन्यो तराजू तोल ॥
 कोई कहै घरमें कोई कहै वनमें, राधाके संग किलोल ।
 मीराके प्रभु गिरधर नागर आवत प्रेमके मोल ॥

जिसका मन-भ्रमर उस श्यामसुन्दरके चरणारविन्दके मकरन्दपानमें रम जाता है, उसे दूसरी बात कैसे अच्छी लग सकती है ? जिसने एक बार उस अनूप रूप-राशिका स्वप्नमें भी दर्शन कर लिया, जिसके हृदयमें उस पुनीत प्रेमका जरा-सा भी अङ्कुर उत्पन्न हो गया, जिसने उस मधुर प्रेमसुधाका भूलकर भी रसास्वादन कर लिया, वह कभी भी इस जगत्के भोगोंकी ओर नहीं देख सकता ।

रमा बिलास राम अनुरागी ।

तजत बमन इव नर बड़भागी ॥

नवयुवती राजपुत्री और राजवधू मीराने भी इसी प्रेमरसका पान करनेके कारण द्वापरकी गोपरमणियोंकी भाँति अपना सर्वस्व

उस विश्वविमोहन मोहनके चरणोंमें अर्पण कर दिया, संसारका कोई भी प्रलोभन या भय उसे विचलित नहीं कर सका। मीरा अश्रुपूर्ण नेत्रोंसे गद्गदकण्ठ होकर रणछोड़जीसे प्रार्थना करने लगी—

मीराको प्रभु साँची दासी बनाओ।

झूठे धन्धोंसे मेरा फन्दा छुड़ाओ॥

लूटे ही लेत विवेकका डेरा।

बुधि बल यदपि करूँ बहुतेरा॥

हाय राम! नहीं कछु बस मेरा।

मरती बिबस प्रभु धाओ धाओ॥

धर्म उपदेस नित ही सुनती हूँ।

मन कुचालसे बहु डरती हूँ॥

सदा साधु सेवा करती हूँ।

सुमिरण ध्यानमें चित धरती हूँ॥

भक्ति मार्ग दासीको दिखाओ।

मीराको प्रभु साँची दासी बनाओ॥

विवाहके बाद इस प्रकार भक्तिके प्रवाहमें दस साल बीत गये। संवत् १५८३में कुमार भोजराजका देहान्त हो गया। महाराणा सांगाजी भी परलोकवासी हो गये। राजगद्दीपर मीराके दूसरे देवर विक्रमाजीत आसीन हुए। मीरा भगवत्प्रेमके कारण वैधव्यके दुःखसे दुःखित नहीं हुई। साधु-महात्माओंका संग बढ़ता गया, मीराकी भक्तिका प्रवाह उत्तरोत्तर जोरसे बहने लगा। राणा विक्रमाजीतको मीराका रहन-सहन, बिना किसी रुकावटके साधु-वैष्णवका महलोंमें आना-जाना और चौबीसों घंटे कीर्तन होना बहुत अखरने लगा। उन्होंने मीराको समझानेकी बड़ी चेष्टा की।

चम्पा और चमेली नामकी दो दासियाँ इसी हेतुसे मीराके पास रखी गयीं, राणाकी बहन ऊदाबाई भी मीराको समझाती रही, परंतु मीरा अपने मार्गसे जरा भी नहीं डिगी। मीराजीने समझानेवाली सखियोंसे पहले तो नम्रतापूर्वक अपना संकल्प सुनाया, अन्तमें स्पष्ट कह दिया—

बरजी मैं काहूकी न रहूँ।

सुनो री सखी तुम चेतन होके मनकी बात कहूँ॥

साधु-संगत कर हरि-सुख लेऊँ जगसूँ दूर रहूँ।

तन धन मेरो सब ही जाओ भल मेरो सीस लहूँ॥

मन मेरो लाग्यो सुमरण सेती सबका मैं बोल सहूँ।

मीराके प्रभु गिरधरनागर सतगुरु शरण गहूँ॥

सखियोंने कहा—‘मीराजी ! आप भगवान्से प्रेम करती हैं तो करें। इसमें किसीको कोई आपत्ति नहीं, परंतु कुलकी लाज छोड़कर दिन-रात साधुओंकी मण्डलीमें रहना और नाचना-गाना उचित नहीं। इससे महाराणा बहुत नाराज हैं।’ मीराने कहा—

सीसोद्यो रूठ्यो तो म्हारो काई कर लेसी।

म्हेतो गुण गोविन्द गास्याँ हो माई॥

राणाजी रूठ्यो तो वाँरो देश रखासी।

हरिजी रूठ्या किठे जास्याँ हो माई॥

लोक लाजकी काण न मानाँ।

निरभै निसाण घुरास्याँ हो माई॥

राम-नामको झ्याझ चल्यास्याँ।

भवसागर तिर जास्याँ हो माई॥

मीरा शरण साँवल गिरधरकी।

चरणकमल लपटास्याँ हो माई॥

कैसा अटल निश्चय है? कितना अचल विश्वास है? कितनी निर्भयता है? कैसा अद्भुत त्याग है? ऊदा और दासियाँ आयी थीं समझानेको, परंतु मीराकी शुद्ध प्रेमाभक्तिको देखकर उनका चित्त भी उसी ओर लग गया। वे भी मीराके इस गहरे प्रेम-रंगमें रँग गयीं। अन्तमें राणाने चरणामृतके नामसे मीराके पास विषका प्याला भेजा। चरणामृतका नाम सुनते ही मीरा बड़े प्रेमसे उसे पी गयी। भगवान्ने अपना विरद सँभाला, विष अमृत हो गया, मीराका बाल भी बाँका नहीं हुआ। बलिहारी है। भगवत्कृपासे क्या नहीं होता?

गरल सुधा रिपु करहिं मिताई।

गोपद सिंधु अनल सितलाई ॥

मीराने प्रेममें मग्न होकर गाया—

राणाजी जहर दियो मैं जानी।

जिन हरि मेरो नाम निवेरो,

छर्यो दूध अरु पानी ॥

जबलग कञ्चन कसियत नाही,

होत न बाहर बानी।

अपने कुलको परदो करियो,

मैं अबला बीरानी ॥

श्वपच भक्त बारैं तन-मनते,

हैं हरि हाथ बिकानी।

मीरा प्रभु गिरधर भजिबेको,

सन्तचरण लिपटानी ॥

मीरा नाचने लगी—

‘पग बाँध घुँघरु मीरा नाची रे’—

दासियोंने जाकर यह समाचार राणाजीको सुनाया, वे तो दंग रह गये। कलियुगमें यह दूसरा प्रह्लाद कहाँसे आ गया?

मीराके आठों पहर भजन-कीर्तनमें बीतने लगे। नींद-भूखका कोई पता नहीं, शरीरकी सुधि नहीं, वह दिनभर रोती और गाया करती।

घड़ी एक नहीं आवडै, तुम दरशण बिन मोय।

तुम हो मेरे प्राणजी, कैसे जीवण होय॥

धान न भावे, नींद न आवे, विरह सतावे मोय।

घायल-सी घूमत फिरूँ रे, मेरा दरद न जाणे कोय॥

दिवस तो खाय गमाइया रे, रैण गमाई सोय।

प्राण गमाया झूरताँ रे, नैण गमाया रोय॥

मीरा रातको मन्दिरके पट बंद करके भगवान्‌के आगे उन्मत्त होकर नाचती। मानो भगवान् प्रत्यक्ष प्रकट होकर मीराके साथ बातचीत करते। महलोंमें तरह-तरहकी चर्चा होने लगी। सखियोंने कहा—‘मीरा ! तुम युवती स्त्री हो, दिनभर किसकी बाट देखती हो, किसके लिये यों क्षण-क्षणमें सिसक-सिसककर रोया करती हो।’ मीरा भावोन्मत्त होकर गाने लगी—

दरस बिन दूखन लागे नैन।

जबसे तुम बिछुरे मेरे प्रभुजी,

कबहुँ न पायो चैन॥

शब्द सुनत मेरी छतियाँ कम्पै,

मीठे लागै बैन।

एकटकटकी पंथ निहारूँ,

भई छमासी रैन॥

बिरह बिथा कासूँ कहूँ सजनी,
 वह गई करवत नैन।
 मीराके प्रभु कब रे मिलोगे,
 दुख मेटन सुख दैन॥

दासियोंने समझाया कि 'बाईजी ! यह सारी बात तो ठीक है, परंतु इस तरह करनेसे आपका कुल लज्जित होता है।' मीराने कहा—'क्या करूँ, मेरे वशकी बात नहीं है।'

आली री, मेरे नैनन बान पड़ी।
 चित्त चढ़ी मेरे माधुरी मूरत,
 उर बिच आनु अड़ी॥
 कबकी ठाढ़ी पंथ निहारूँ,
 अपने भवन खड़ी।
 मीरा गिरधर हाथ बिकानी,
 लोक कहें बिगड़ी॥

कितना पवित्र भाव है, परंतु 'जाकी जेती बुद्धि है, तेती कहत बनाय' के अनुसार लोगोंने कुछ-का-कुछ बना दिया। मनुष्य प्रायः अपने ही मनके पापका दूसरेपर आरोप किया करता है। किसीने जाकर राणाजीके कान भर दिये, उन्हें समझा दिया कि मीराका तो चरित्र भ्रष्ट हो गया है। दिनभर तो वह विरहिणीकी तरह रोया करती है और रातको आधी रातके समय उसके महलमें किसी दूसरे पुरुषकी आवाज सुनायी देती है। हो-न-हो कुछ-न-कुछ दालमें काला अवश्य ही है।

राणाको यह बात सुनकर बड़ा क्रोध हुआ, उसी दिन रातको वह आधी रातके समय नंगी तलवार हाथमें लेकर मीराके महलमें

गये। किंवाड़ बंद थे। राणाको भी अंदरसे किसी पुरुषकी आवाज सुन पड़ी, नहीं कह सकते कि यह राणाके दृढ़ संकल्पका फल था या भगवान्की लीला थी। खैर, राणाने अकस्मात् किंवाड़ खुलवाये। देखते हैं तो मीरा प्रेमसमाधिमें बैठी है। दूसरा कोई नहीं है। राणाने मीराको चेत कराकर पूछा कि 'बताओ, तुम्हारे पास दूसरा कौन था ?' मीराने झटसे जवाब दिया—'मेरे छैल-छबीले गिरधरलालजीके सिवा और कौन होता। जगत्में दूसरा कोई हो तो आवे।' राणा इन वचनोंका मर्म क्यों समझने लगे। उन्होंने बड़ी सावधानीसे सारे महलमें खोज की, परंतु कहीं कोई नहीं दीख पड़ा, तब लज्जित होकर लौटने लगे। मीराने पद गाया—

राणाजी! मैं साँवरे रंग राची।

सज सिणगार पद बाँध घूँघरू,
 लोक लाज तजि नाची ॥
 गयी कुमति लहि साधुकी संगति,
 भक्ति रूप भइ साँची।
 गाय गाय हरि के गुण निसिदिन,
 काल-ब्याल तैं बाँची ॥
 उन बिनु सब जग खारो लागत
 और बात सब काँची।
 मीराके प्रभु गिरधर नागर,
 भक्ति रसीली जाँची ॥

दूसरा पद गाया—

बसो मेरे नैननमें नँदलाल ॥

मोहनी मूरति साँवरि सूरति, नैणा बने बिसाल।

अधर-सुधारस मुरली राजत, उर बैजन्ती-माल ॥

छुद्र घंटिका कटि-तट सोभित, नूपुर सबद रसाल।

मीरा प्रभु संतन सुखदाई, भगत बछल गोपाल॥

राणाके विलास-विभ्रमरत, मोह-आवृत मलिन मनपर
मीराकी अमृत-वाणीका कोई असर नहीं हुआ, राणा वापस
लौट गये। मीरा उसी तरह 'लोक-लाज कुलकान' बहाकर
बेधड़क हरिचर्चा करने लगी। एक दिन एक भण्ड साधुने आकर
मीरासे कहा कि 'मुझे गिरधरलालजीने तुम्हारे पास भेजा है
और तुम्हें मेरे साथ अङ्ग-सङ्गके लिये आज्ञा दी है।' मीराने
कहा—'अच्छी बात है; पहले आप भोजन कर लीजिये।' मीराने
आदरपूर्वक उसे भोजन कराया और फिर साधुओंकी
मण्डलीमें पलंग बिछाकर बोली कि 'महाराज ! आइये।'।
दुरात्माने चुपकेसे मीराके पास आकर कहा कि स्त्री-पुरुषका
संग कहीं यों इतने लोगोंके सामने होता है?' मीराने कहा—
'महाराज ! ऐसा कौन-सा एकान्त स्थल है जहाँ मेरे
गिरधरलालजी नहीं विराजते हों। मैं तो जहाँ देखती हूँ वहीं
खड़े दीखते हैं। फिर इस शरीरमें तो अनेक देवताओंका
निवास है। चन्द्र, सूर्य, तारागण हमारे सम्पूर्ण कर्मोंके साक्षी
हैं। यमराजके दूत तो हिसाब ठीक रखनेके लिये सदा ही
घूमते रहते हैं। जब इतने लोग देखेंगे तो फिर साधु-मण्डलीसे
ही आपको लज्जा क्यों होती है।' मीराने जब सबके सामने
जोरसे यों कहा, तब वह बड़ा लज्जित हो गया। लोग उसे
धिक्कारने लगे, उसका मोह भङ्ग हो गया, मीराके चरणोंमें पड़कर
उसने अपने पापके लिये क्षमा माँगी और उद्धारका उपाय पूछा।
मीराने बड़े प्रेमसे कहा—

मन रे परसि हरिके चरण ॥

सुभग सीतल कँवल कोमल त्रिविध ज्वाला-हरण ।

जिण चरण प्रह्लाद परसे, इन्द्र-पदवी-धरण ॥

जिण चरण ध्रुव अटल कीन्हें, राख अपनी सरण ।

जिण चरण ब्रह्मांड भेंट्यो नखसिखाँ सिरी धरण ॥

जिण चरण प्रभु परसि लीने तरी गोतम-घरण ।

जिण चरण काली-नाग नाथ्यो गोप-लीला करण ॥

जिण चरण गोबरधन धारयो गर्व मघवा हरण ।

दासि मीरा लाल गिरधर अगम तारण तरण ॥

फिर कहा—

राम नाम रस पीजै, मनुआँ राम नाम रस पीजै ।

तज कुसंग सत्संग बैठ नित, हरि-चर्चा सुन लीजै ॥

काम क्रोध मद लोभ मोहकूँ, बहा चित्तसे दीजै ।

मीराके प्रभु गिरधर नागर ताहिके रंगमें भीजै ॥

मीराके दिव्य उपदेशसे वह नामधारी साधु असली साधु

बन गया ।

कहते हैं कि मीराके पदोंकी प्रशंसा सुनकर एक बार तानसेनको साथ लेकर बादशाह अकबर वैष्णवके वेशमें मीराके पास आये थे और मीराकी भक्तिका अद्भुत प्रभाव देखकर रणछोड़जीके लिये एक अमूल्य हार देकर लौट गये थे । इससे भी लोगोंमें बड़ी चर्चा फैली । राणाने क्रोधित होकर मीराके नाशके लिये एक पिटारीमें काली नागिनको बंद करके शालग्रामजीकी मूर्तिके नामसे उसके पास भेजी । शालग्रामका नाम सुनते ही मीराके नेत्र डबडबा आये । उसने बड़े उत्साहसे पिटारी खोली, देखती है

तो सचमुच उसमें एक श्रीशालग्रामजीकी सुन्दर मूर्ति और एक मनोहर पुष्पोंकी माला है। मीरा प्रभुके दर्शन कर नाचने लगी।

मीरा मगन भई हरिके गुण गाय ॥

साँप पिटारा राणा भेज्या मीरा हाथ दिया जाय।

न्हाय-धोय जब देखन लागी, सालिगराम गयी पाय ॥

×

×

×

मीराके प्रभु सदा सहाई, राखे बिघन हटाय।

भजन-भावमें मस्त डोलती, गिरधर पै बलि जाय ॥

राणाजीने और भी अनेक उपायोंसे डिगाना चाहा, परंतु मीरा किसी तरह भी नहीं डिगी। जब राणा बहुत सताने लगे तब मीराने गोसाईं तुलसीदासजीको एक पत्र लिखा।

स्वस्तिश्री तुलसी गुण-भूषण दूषण हरण गोसाईं।

बारहिं बार प्रणाम करहुँ अब हरहु सोक-समुदाई ॥

घरके स्वजन हमारे जेते सबन उपाधि बढ़ाई।

साधु संग और भजन करत मोहिं देत कलेश महाई ॥

सो तो अब छूटत नहिं क्यों हूँ लगी लगन बरियाई।

बालपनेमें मीरा कीन्हीं गिरधरलाल मिताई ॥

मेरे मात तात सम तुम हो हरि भक्तन सुखदाई।

मोकों कहा उचित करियो अब सो लिखिये समुझाई ॥

गोसाईंजी महाराजने उत्तरमें यह प्रसिद्ध पद लिख भेजा—

जाके प्रिय न राम-बैदेही।

सो छाँड़िये कोटि बैरी सम, जद्यपि परम सनेही।

तज्यो पिता प्रह्लाद, बिभीषन बंधु, भरत महतारी।

बलि गुरु तज्यो कंत ब्रज बनितन्हि, भये मुद-मंगलकारी ॥

नाते नेह रामके मनियत सुहृद सुसेव्य जहाँ लौं।
 अंजन कहा आँखि जेहि फूटै, बहुतक कहौं कहाँ लौं ॥
 तुलसी सो सब भाँति परम हित पूज्य प्राणते प्यारो।
 जासों होय सनेह राम-पद एतो मतो हमारो ॥

इस पत्रको पाकर मीराने घर छोड़कर वृन्दावन जानेका निश्चय कर लिया*। राणाजीको तो इस बातसे बड़ी प्रसन्नता हुई, परंतु ऊदाजी और मीराकी अन्यान्य प्रेमिका सखियोंको बड़ा दुःख हुआ। उन्होंने मीराको रोकना चाहा, मीराने उत्तर दिया—
 बाला मैं बैरागण हूँगी।

जिन भेषाँ म्हारो साहिब रीझे, सोही भेष धरूँगी ॥
 सील संतोष धरूँ घट भीतर, समता पकड़ रहूँगी।
 जाको नाम निरंजन कहिये, ताको ध्यान धरूँगी ॥
 गुरुके ग्यान रँगूँ तन कपड़ा, मन मुद्रा पैरूँगी।
 प्रेम प्रीतसूँ हरिगुण गाऊँ, चरणन लिपट रहूँगी ॥
 या तनकी मैं करूँ कींगरी, रसना नाम कहूँगी।
 मीराके प्रभु गिरधर नागर साधाँ संग रहूँगी ॥

* इतिहासज्ञ सज्जन कहते हैं कि मीराजीका श्रीगोस्वामीजीसे कोई पत्र-व्यवहार नहीं हुआ था। कारण, गोस्वामीजी मीराजीके बाद हुए हैं। जो कुछ भी हो, दोनों भक्तोंके दोनों पद बड़े उपदेशप्रद हैं।

मीराने किसीकी कुछ भी नहीं सुनी, वह झटपट महलसे निकलकर वृन्दावनकी ओर चल पड़ी। प्रीतमकी खोजमें जानेवाले कभी पीछेको नहीं देखा करते। मीरा भी आज उस परम प्यारे श्यामसुन्दरकी खोजमें उन्मादिनी होकर दौड़ रही है। धन्य है! मीरा वृन्दावन पहुँची और वहाँ श्यामसुन्दरके प्रत्यक्ष दर्शनके लिये विरहके गीत गाती कुञ्ज-कुञ्जमें भटकने लगी। जो उसे देखता, वही भक्तिरससे भींग जाता था। मीरा गाती थी—

राम मिलण रो घणो उमावो
 नित उठ जोऊं बाटड़ियाँ ।
 दरस बिना मोहि कछु न सुहावै
 जक न पड़त है आँखड़ियाँ ॥
 तडफत तडफत बहु दिन बीते
 पड़ी बिरहकी फाँसड़ियाँ ।
 अब तो बेग दया कर प्यारा
 मैं छूँ थारी दासड़ियाँ ॥
 नैण दुखी दरसणकूँ तरसैं,
 नाभि न बैठे सासड़ियाँ ।
 रात दिवस हिय आरत मेरो
 कब हरि राखै पासड़ियाँ ॥
 लगी लगन छूटणकी नाहीं
 अब क्यूँ कीजै आँटड़ियाँ ।
 मीराके प्रभु कब र मिलोगे
 पूरो मनकी आसड़ियाँ ॥

मीरा रो-रोकर पुकारती—

जैसे जलके सुष्क होयतें जिये न मीन बिचारे ।
 किरपा कीज्यो दर्शन दीज्यो मीरा प्राण दुलारे ॥
 तुम्हरे कारण सब सुख छोड्या अब मोहि क्यूँ तरसाओ ।
 अब छोड्याँ नहिं बनै प्रभुजी चरणाँ पास बुलाओ ॥

प्रेमरसमें छकी हुई मीरा यों विरहके गीत गाती फिरती । जब
 भक्त भगवान्‌के लिये व्याकुल होते हैं तब भगवान् भी उनसे
 मिलनेके लिये वैसे ही व्याकुल हो उठते हैं । एक दिन मीरा गा
 रही थी—

बंसीवारा आज्यो म्हारे देस
 थारी साँवरी सुरत क्हालो बेस ॥
 आऊँ आऊँ कर गया साँवरा,
 कर गया कौल अनेक ।
 गिणताँ गिणताँ घस गई जी
 म्हारी आँगळियाँ री रेख ॥
 मैं बैरागिण आदिकी जी,
 थारे म्हारे कदको सनेस ।
 बिन पाणी बिन साबुण साँवरा,
 हो गई धोय सफेद ॥
 जोगण होय जंगल सब हेरूँ,
 तेरा नाम न पाया भेस ।
 तेरी सुरतके कारणे मैं तो,
 धारया भगवाँ भेस ॥
 मोर-मुकुट पीतांबर सोहै
 घूँघरवाला केस ।
 मीराके प्रभु गिरधर नागर
 मिल्याँ मिटैगो कलेस ॥

भक्त भगवान्को बाध्य कर लेते हैं। मीराके निकट बाध्य
 होकर भगवान्को आना पड़ा। उस मनोहर छविको निरख मीरा
 मोहित हो गयी। नाच-नाचकर गाने लगी—

आजु मैं देख्यो गिरधारी ।
 सुन्दर वदन मदनकी सोभा चितवन अनिवारी ।
 बजावत बंसी कुञ्जनमें ।
 गावत माल तरंग रंग ध्वनि नचत ग्वाल-गनमें ॥

माधुरी मूरति वह प्यारी।
 बसी रहै निसिदिन हिरदै बिच टरे नहीं टारी॥
 वाहिपर तन मन है वारी।
 वह मूरति मोहिनी निहारत लोक-लाज डारी॥
 तुलसी बन कुञ्जन संचारी।
 गिरधर लाल नवल नटनागर मीरा बलिहारी।
 मीरा प्रेमरसमें छककर गाने लगी—
 जबसे मोहि नन्दनँदन दृष्टि परयो माई।
 तबतें परलोक लोक कछू ना सोहाई॥
 मोरमुकुट चन्द्रिका सुशीश मध्य सोहै।
 केसरको तिलक भाल तीनि लोक मोहै॥
 साँवरो त्रिभंग अंग चितवनिमें टोना।
 खंजन औ मधुप मीन भूलै मृग छौना॥
 अधर बिम्ब अरुण नयन मधुर मंद हासी।
 दसन दमक दाड़िम द्युति दमके चपला-सी॥
 क्षुद्रघंटिका अनूप नूपुर-ध्वनि सोहै।
 गिरधरके चरण-कमल मीरा मन मोहै॥
 उस रूपराशिको देखकर किसका चित्त उन्मत्त नहीं होता ?
 जिसने उसे देख पाया वही पागल हो गया।
 श्यामासहित श्यामको निहारि इन आँखिनते।
 मीरा भई बावरी सुबावरी सुबावरी॥
 मीरा पागलकी तरह चारों ओर उसकी मधुर छविका दर्शन
 करती हुई गाती फिरती है—

मेरे तो गिरधर-गोपाल दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर-मुकुट, मेरो पति सोई॥
तात मात भ्रात बन्धु, आपनो न कोई।
छाँड़ दई कुळ की कान कहा करिहैं कोई।
संतन ढिग बैठि बैठि लोक-लाज खोई॥
चुनरीके किये टूक ओढ़ लीन्हि लोई।
मोती मूँगे उतार, बनमाला पोई॥
अँसुवनजळ सींच-सींच, प्रेम-बेलि बोई।
अब तो बेल फैल गई, आँणद फल होई॥
दूधकी मथनियाँ बड़े प्रेमसे बिलोई।
माखन जब काढ़ि लियो, छाछ पिये कोई॥
भगति देखि राजी हुई जगत देखि रोई।
दासी मीरा लालगिरधर तारो अब मोही॥

दूसरा पद—

स्याम! म्हाँने चाकर राखो जी, गिरधारीलाल! चाकर राखो जी॥
चाकर रहसूँ बाग लगासूँ, नित उठ दर्शन पासूँ।
वृन्दावनकी कुंजगलिनमें गोविंदका गुण गासूँ॥
चाकरीमें दरसन पाऊँ, सुमिरन पाऊँ खरची।
भाव-भगति जागीरी पाऊँ तीनों बातों सरसी॥
ऊँचे-ऊँचे महल बनाऊँ, बिच-बिच राखूँ बारी।
साँवलियाका दरसन पाऊँ, पहिर कुसूँमल सारी॥
जोगी आया जोग करनकूँ, तप करणे संन्यासी।
हरी भजनको साधू आये, वृन्दावनके बासी॥
मीराके प्रभु गहिर गँभीरा, ह्रदै रहो जी धीरा।
आधी रात प्रभु दर्शन दीन्हों, प्रेम-नदीके तीरा॥

एक बार मीराजी वृन्दावनमें श्रीचैतन्यमहाप्रभुके शिष्य परमभक्त जीव गोस्वामीजीका दर्शन करनेके लिये गयीं। गोसाईंजीने भीतरसे कहला भेजा कि हम स्त्रियोंसे नहीं मिलते। मीराने इसपर उत्तर दिया कि 'महाराज ! आजतक तो वृन्दावनमें पुरुष एक श्रीनन्दनन्दन ही थे और सभी स्त्रियाँ थीं, आज आप भी पुरुष प्रकट हुए हैं।' मीराका रहस्यमय उत्तर सुनकर जीवजी महाराज नंगे पैरों बाहर आकर बड़े प्रेमसे मीराजीसे मिले।

मीराके कई पदोंसे पता लगता है कि मीरा भक्तप्रवर रैदासजीकी चेली थी; परंतु एक पदसे यह भी मालूम होता है कि मीरा श्रीचैतन्यमहाप्रभुके सम्प्रदायकी वैष्णवी थी और शायद जीव गोस्वामीको उसने अपना गुरु बनाया था। सम्भव है कि दो समयमें दोनोंसे दीक्षा ली हो। श्रीचैतन्यकी स्तुतिका पद इस प्रकार है—

अब तौ हरी नाम लौ लागी।

सब जगको यह माखन-चोरा, नाम धर्यो बैरागी॥

कित छोड़ी वह मोहन मुरली, कित छोड़ी सब गोपी।

मुँड़ मुँड़ाइ डोरि कटि बाँधी, माथे मोहन टोपी॥

मात जसोमति माखन कारन, बाँधे जाको पाँव।

श्याम किशोर भये नव गौरा, चैतन्य ताको नाँव॥

पीताम्बरको भाव दिखावै, कटि कौपीन कसै।

गौर-कृष्णकी दासी मीरा, रसना कृष्ण बसै॥

कुछ काल वृन्दावन निवास कर मीरा द्वारकाको चली गयी और वहाँ श्रीरणछोड़ भगवान्के दर्शन और भजनमें अपना समय बिताने लगी। कहते हैं, एक बार चित्तौड़से राणाजी उसे वापस लौटानेके लिये द्वारकाजी गये थे। मीराजीके चले जानेके बाद चित्तौड़में बड़े उपद्रव होने लगे थे। लोगोंने राणाको समझाया कि

आपने मीरा-सरीखी भगवत्की प्रेमिकाका तिरस्कार किया है; उसीका यह फल है। राणा इसीलिये मीरासे क्षमा-याचनाकर उसे वापस लौटाकर ले जाना चाहते थे। परंतु मीराने जाना किसी तरह भी स्वीकार नहीं किया।

मीराने कहा—

राणाजी म्हाँरी प्रीति पुरबली मैं काँई करूँ ॥
 राम नाम बिन नहीं आवड़े हिबड़ो झोला खाय।
 भोजनिया नहिं भावै म्हाँने, नींदइली नहिं आय ॥

×

×

×

×

राठौड़ाँकी धीयड़ीजी, सीसोद्याके साथ।
 ले जाती वैकुण्ठको म्हारो नेक न मानी बात ॥

राणाजीको यों ही वापस लौटना पड़ा। मीरा प्रभुके सामने गाने लगी—

रमैया मैं तो थारे रंग राती ॥

औरोंके पिया परदेस बसत हैं, लिख लिख भेजें पाती।

मेरा पिया मेरे हृदय बसत है, रोल करूँ दिन राती ॥

चूवा चोला पहिर सखी री, मैं झुरमट रमवा जाती।

झुरमटमें मोहि मोहन मिलिया, घाल मिली गलबाँथी ॥

और सखी मद पी पी माती, मैं बिन पियाँ ही माती।

प्रेम-भठीको मैं मद पीयो, छकी फिरूँ दिन राती ॥

सुरत निरतको दिवलो जोयो, मनसा पूरन बाती।

अगम घाणिको तेल सिंचायो, बाल रही दिन राती ॥

जाऊँनी पीहरिये आऊँनी सासरिये हरिसूँ सैन लगाती।

मीराके प्रभु गिरधर नागर, हरि चरना चित लाती ॥

मीराजी श्रीद्वारकाधीशजीके मन्दिरमें आकर प्रेममें उन्मत्त होकर गाने लगीं—

सजन सुध ज्यों जानो त्यों लीजै।

तुम बिन मेरे और न कोई कृपा रावरि कीजै॥

दिन नहिं भूख रैन नहिं निद्रा यों तन पल-पल छीजै।

मीरा कह प्रभु गिरधर नागर मिलि बिछुरन नहिं दीजै॥

दूसरा पद—

अब तो निभायाँ सरेगी, बाँह गहेकी लाज।

समरथ सरन तुम्हारी सड़याँ, सरव सुधारण काज॥

भवसागर संसार अपरबल, जामें तुम हो जहाज।

निरधाराँ आधार जगत गुरु, तुम बिन होय अकाज॥

जुग जुग भीर हरी भक्तनकी, दीनी मोक्ष समाज।

मीरा सरण गही चरणनकी, लाज रखो महाराज॥

यों कहकर मीरा नाचने लगी और अन्तमें भगवान् रणछोड़जीकी मूर्तिमें समा गयी।

नृत्यत नूपुर बाँधिके गावत लै करतार।

देखत ही हरिमें मिली, तृण-सम गनि संसार॥

मीरा को निज लीन किय, नागर नन्दकिशोर।

जग प्रतीत हित-नाथ-मुख, रह्यो चूनरी छोर॥

कहा जाता है कि संवत् १६३० के अनुमान मीराजीका देह भगवान्में मिला था। मीराजीने कई ग्रन्थ रचे थे, जो इस समय नहीं मिलते हैं। मीराके भजन तो प्रसिद्ध हैं, जो गाता और सुनता है, वही प्रेममें मत्त हो जाता है। मीराने प्रकट होकर भारतवर्ष, हिन्दू-जाति और नारी-कुलको पावन और धन्य कर दिया।

बोलो भक्त और उनके भगवान्की जय।

